Press Clipping

Publication : DNA
Date : 06-07-2013
Edition : Ahmedabad
Page : 11 (Weekend Biz)

Remembering Dhirubhai: Dreamer & an achiever

Parimal Nathwani

Exactly eleven years ago — July 6, 2002 — the legendary and visionary Dhirubhai Ambani left us for heavenly abode. We still hesitate to prefix 'late' before his name, as his platonic presence is felt around us all the time.

Truly, it's the physical body that diminishes and not the soul. In that sense, Dhirubhai Ambani is as eternal as any divine element. The latent aura that encircled his persona, the luster on his face and brightness in his eyes made him different from others. He was the most admired and well-known businessman the country ever produced.

A quote from Khalil Jibran, I often feel as if it's especially written for Dhirubhai Ambani. The quote reads: 'Trust in dreams, for in them is hidden the gate to eternity.' Dhirubhai was the man who saw dreams, realized them and secured eternity. He proved that one can change and shape the course of life with courage, conviction and commitment. Destiny bestowed all the fortune upon him because of his bravery. He never complained about hurdles and bottlenecks that came his way. Rather, he knew how to overcome the obstacles and chart out a path of progress — in his own words 'convert the adversity into opportunity'.

He was not only a dreamer but a man of action as well. He would take equal interest even in the smaller things. He was a man of communication and action. Before the advent of cellular phones, he ensured that most of his engineers, technicians and administrators on the project were equipped with pagers and walkie-talkie sets.

Dhirubhai was so kind hearted that anything related to village development or community welfare would receive quick and handsome sanctions. The corporate social responsibility (CSR) projects were equally close to his heart and he was indeed passionate about it.

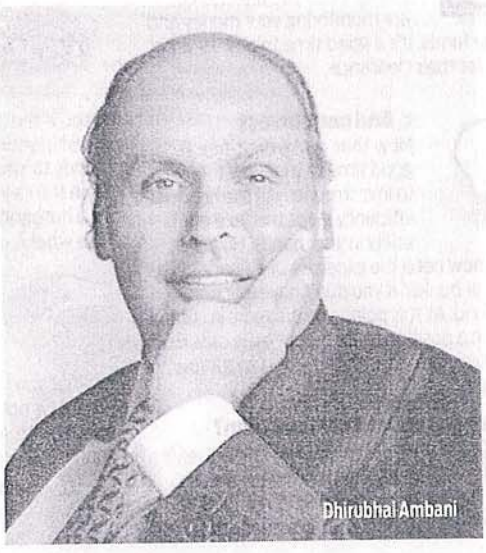

Dhirubhai Ambani

He used to ask for feedbacks on key things such as what deities if it was a village temple or number of cows if it was for a cowshed. For project details too, he was very meticulous, thorough and enlightened. I also remember a case of his foresightedness. During the construction of Jamnagar refinery, Dirubhai insisted on having an earthquake-resistant structure. He didn't mind if the project cost was increased by a few hundred million rupees.

His concerns and engagements for Gujarat earthquake relief in 2001, supply of drinking water during droughts and famines in Jamnagar etc is a known to everyone. When I think of him now, I recall Jibran's words: 'I existed from all eternity and, behold, I am here; and I shall exist till the end of time, for my being has no end.' Perhaps, it's because of this why we refrain from using the prefix 'late' before his name.

(Parimal Nathwani is a Rajya Sabha member and group president Reliance Industries Limited.)

Press Clipping

Publication : Rajasthan Patrika
Date : 06-07-2013
Edition : Ahmedabad
Page : 2 (Gujarat)

झिझकते हैं 'स्वर्गीय' शब्द लगाते

■ धीरूभाई अंबानी की 11वीं पुण्यतिथि पर विशेष

आज से ठीक ग्यारह वर्ष पूर्व 6 जुलाई 2002 के दिन स्वप्नदृष्ट धीरूभाई अंबानी ने प्रयाण किया लेकिन अब भी उनके नाम के आगे स्वर्गीय विशेषण लगाते हुए झिझक होती है, क्योंकि उनकी उपस्थिति का एहसास अपने इर्द-गिर्द हमें लगातार महसूस होता है। वास्तव में नाशवत शरीर है, आत्मा नहीं। उस हिसाब से धीरूभाई अंबानी अन्य दिव्य तत्वों की तरह ही चिरंजीव हैं। उनके व्यक्तित्व को जैसे एक तेजपुंज हमेशा घेरे रहता। चेहरे की दिव्य मुख-आभा और आखों की चमक उनको दूसरों से अलग कर देती थी। वे देश के सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त और सम्मानित उद्योगपति थे। खलील जिब्रान का एक वाक्य, मुझे लगता है जैसे धीरूभाई अंबानी के लिए ही लिखा गया था। जिब्रान ने कहा 'स्वप्नों में श्रद्धा रखो क्योंकि इनमें ही अमरत्व की राह निहित है'। धीरूभाई ऐसी शख्सियत थे जिन्होंने सपने देखे, साकार किए और अमरत्व हासिल किया।

धीरूभाई ने सिद्ध कर दिखाया कि हिम्मत, श्रद्धा और निष्ठा के बलबूते पर इंसान अपने जीवनपथ को बदल सकता है और उसे अपनी इच्छा के मुताबिक संवार सकता है। हम अक्सर कहते हैं, हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा, नसीब भी हिम्मतवालों का साथ देता है। कुदरत ने उनकी हिम्मत की बदौलत ही उन पर सदनसीबी की बौछार की थी। कठिनाइयों की कभी शिकायत नहीं की बल्कि वो जानते थे कि 'आफत को किस तरह अवसर में बदला जाए' (ये उन्हीं के शब्द हैं)। कठिनाइयों को झेलकर भी विकास की राह तय करना वे भली-भांति जानते थे।

वे केवल स्वप्नदृष्ट नहीं थे, वे कर्मनिष्ठ भी थे। छोटी से छोटी बातों में वे रूचि रखते थे, वे संवाद और अमलीकरण के इन्सान थे। मोबाइल फोन आए उससे पहले उन्होंने अपने प्रोजेक्ट पर कार्यरत हजारों इंजीनियरों, तकनीशियनों और अधिकारियों को पेजर और वॉकी-टाकी सेट मुहैया कराए थे। वे छोटी से छोटी बात को महत्व देते थे। बड़े हृदय और उदार चरित, धीरूभाई ग्रामीण विकास या सामाजिक भलाई का कोई भी प्रस्ताव तुरंत मंजूर कर देते थे।

आज सी.एस.आर. के नाम पर जिस सामाजिक उत्तरदायित्व के बारे में चर्चा हो रही है उसके लिए वे हमेशा सजग रहे, इस काम के लिए वे हमेशा उत्सुक रहे। गांव के मंदिर में कौन देवी देवता की प्रतिमा लगेगी या गौशाला में गायों की संख्या जैसी छोटी-छोटी बातों की भी वे पूछ ताछ करते और उनसे अवगत रहते। प्रोजेक्ट की बारीकियों के बारे में भी वे पूर्णतया परिचित रहते थे।

उनकी दूरंदेशी का एक वाकया मुझे याद है, जामनगर रिफाइनरी के निर्माण के समय उन्होंने पूंजी लागत के कुछ करोड़ रुपए की धनराशि बढ़ जाने की चिंता किए बिना खर्च बढ़ने की चिंता न करते भूकंप का सामना कर सके ऐसा निर्माण करने पर जोर दिया था। गुजरात के वर्ष 2001 के भूकंपग्रस्त लोगों और अकाल में पीने के पानी की आपूर्ति के लिए उनकी ओर से की गई पहल और किया गया कार्य जाना पहचाना इतिहास है।

मैं उनके बारे में सोचता हूं तो जिब्रान के वो शब्द याद आ जाते हैं जिसमें कहा गया है 'मैं समग्र अनंत में व्याप्त हूं, और देखो, मैं यहीं रहने वाला हूं, क्योंकि मेरे अस्तित्व का अंत नहीं है'। शायद यही वजह है कि हम धीरूभाई अंबानी के नाम से पहले 'स्वर्गीय' विशेषण लगाते हुए झिझकते हैं।

– परिमल नथवाणी,
ग्रुप प्रेसिडेंट, रिलायन्स इंन्डस्ट्रीज एवं राज्यसभा सदस्य।